

“वजूद और आत्मा”

श्रीमती किरण सेठी (दिल्ली)

परम आदरणीय सुन्दरसाथ जी, जैसाकि हम सब जानते हैं कि हम दुखरूपी खेल देखने यहाँ आये हैं। श्री राज जी महाराज से तकरार करके उनके बार-बार मना करने पर भी हमने माया देखने की इच्छा व्यक्त की। और आज हम इस खेल को देखने की बजाय खुद खेल बन गये हैं। माया के अन्दर इतने लिप्त हो गये हैं कि हम अपने असल ठिकाने को तो बिल्कुल ही भूले बैठे हैं। हम इस फानी दुनिया को ही अपना समझ बैठे हैं जबकि हम यह जानते भी हैं कि इस मिथ्या जगत की हर चीज मिथ्या है, नश्वर है लेकिन फिर भी हमने उनमें अपना इतना मोह फँसाया हुआ है कि हमें अपने असल घर की सुघ तक नहीं आ रही है। हम अपने वजूदों के रिश्तों को ही अपना सर्वस्व मानकर बैठे हैं। आज यदि हमारे एक तरफ श्री सुन्दरसाथ जी हो और दूसरी तरफ हमारे वजूदों के रिश्तेदार हो तो हम पहले उनसे (शारीरिक सम्बन्धियों) से मिलना पसन्द करते हैं। यदि किसी से यह पूछा जाए कि आपके रिश्तेदार आपके साथ जायेंगे तब हम लोग बहुत शीघ्र ये जवाब देते हैं कि “जी नहीं हमें पता है ये हमारे साथ नहीं जायेंगे लेकिन क्या करें मजबुरी है इस दुनियाँ में रहकर उनको छोड़ा भी तो नहीं जा

सकता, उनसे भी निभानी पड़ती है। वाह, मेरे पूजनीय साथ जी उस समय ये जवाब सुनकर इतना दुख होता है कि हम उस सुन्दरसाथ जी (जिनसे हमारा असल नाता है) को तो छोड़ सकते हैं लेकिन वजूदों के रिश्तेदारों को नहीं छोड़ सकते हम ये नहीं कहते कि हम वजूदों के रिश्तेदारों से बिल्कुल ही बोलना छोड़ दे लेकिन हम उनमें इतना ज्यादा भी लिप्त न हो जाए कि अपने असल साथ को ही भूल जाएँ।

प्यारे सुन्दरसाथ जी, कुछ तो विचारिये। हम कहाँ के थे और कहाँ पर आकर खो गये हैं। हमारा असल घर तो वो है नहीं: जिसको अपना बनाए बैठे हैं। श्री राज जी महाराज स्वयं अपनी रूहों को जगाने आये हैं आज हम उनकी पहचान करके भी वजूदों की दीवारों बीच में खड़ी कर देते हैं व उनको पहचानते हुए भी आँखें मूँद लेते हैं। आज हमारा ईमान इतना कच्चा हो गया है कि हमारे पास जरा सा भी यदि माया का दुख आता है तो हम अपने प्रीतम को भी भूल जाते हैं। हर किसी के शारीरिक अवगुणों को देखने लगते हैं। हमारा विश्वास मात्र शारीरिक अवगुणों के कारण डगमगा जाता है। आज जबकि हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि यहाँ जो भी

चीज बनती है उसका नाश अवश्य होता है। फिर हम वजूदों को पकड़े बैठे हैं। हमें किसी के भी शारीरिक अवगुणों को नहीं देखना चाहिये। दूसरों के अवगुण देखने से पहले हम अपने ही अन्दर झाँक कर देख लें कि हमारे अन्दर भी कितने अवगुण हैं।

हम अपनी बुद्धि को ही सबसे ऊँचा मानना शुरू कर देते हैं। तभी तो श्री राज जी महाराज हमसे दूर हो जाते हैं। वह जब देखते हैं कि इसको अपने ऊपर इतना गुणगान हो गया है कि ये भुझे भी कुछ नहीं समझता और अपनी ही बुद्धि को ऊँचा बनाए बैठा है तो धनी उसको फिर ऐसे नीचे गिराते हैं कि वह फिर उठने के काबिल भी नहीं रह जाता।

इसलिए सुन्दरसाथ जी ये माया और उसके वजूदों के रिश्ते सब मिथ्या हैं तो फिर हम इन्हीं के चक्करों में क्यों उलझें। क्यों न हम अपना समय अपने 'पिया' के चरणों में बितायें श्री बीतक साहब में भी स्पष्ट आता है कि जब 'माया' और 'श्री राज जी महाराज' में तकरार हुई थी तो माया ने कहा था कि मैं भी आपके बन्दों को ऐसे ऐसे प्रलोभन दिया करूँगी कि वो आपको कभी याद नहीं कर सकेंगे। आज देख लीजिए हमारे सामने वीडियो आ गये हैं। टी० वी० पर भी दो दो पिकचरें आती हैं। तो हम सोचते हैं कि चलो कीर्तन पर कौन जायगा आज तो इतनी अच्छी पिकचर आयेगी। या वीडियो पर पिकचर देखेंगे। पाठ पढ़ने कौन जाए (किसी भी प्रोग्राम में) जहाँ धर्म का काम होगा वहा हम जाना पसन्द नहीं

करेंगे। हमतो जान-बूझकर माया के दल-दल में फँसेंगे।

परम आदरणीय साथ जी अब तो अंतिम समय आ गया है कम से कम हम अब तो कुछ पहचान कर लें। यदि आज हमें कोई ये कहता भी है कि अब हम कुछ तो अपने घर को भी याद कर लें अपने पिया को भी याद कर ले वक्त आखिरत को 'श्री राजी महाराज' को क्या मुँह दिखलायेंगे तो हम कहते हैं छोड़ो यार उस समय थोड़ा सा सिर ही तो झुकाना पड़ेगा झुका लेंगे कौन सा फर्क पड़ता है श्री राजी महाराज हमें छोड़ तो सकते नहीं चाहे हम कितने भी कुर्कम किये जाए बस हमारे मन में तो यही धारणा बैठ चुकी है कि यदि हम उसके हैं तो वह हमें किसी हालत में यहाँ नहीं छोड़ सकते। हम यह बिल्कुल ही भूल जाते हैं कि वाणी में इसके लिए क्या लिखा है। उस समय हमें कितनी शर्मिंदगी उठानी पड़ेगी। हमारी स्थिति क्या होगी हम अपने 'पिया' से नजरें कैसे मिलायेंगे आज यदि हम इन सब बातों पर शान्तिपूर्वक थोड़ा भी विचार कर ले तो हम अपने 'धनी' के आगे कुछ तो नजर उठा सकेंगे।

प्रिय साथ जी से अपने अवगुणों के लिए क्षमा माँगते हुए यह कहना चाहूँगी कि हम शारीरिक अवगुणों को न देखकर आत्मा के नाते को मध्य नजर रखते हुए अपने मार्ग पर बढ़ते जाएँ और समय का पूरा-पूरा लाम उठाते हुए 'पिया' के चरणों में ध्यान लगाए व अपने घर जाने की तैयारी करें।